शाश्वत जीवन मूल्य

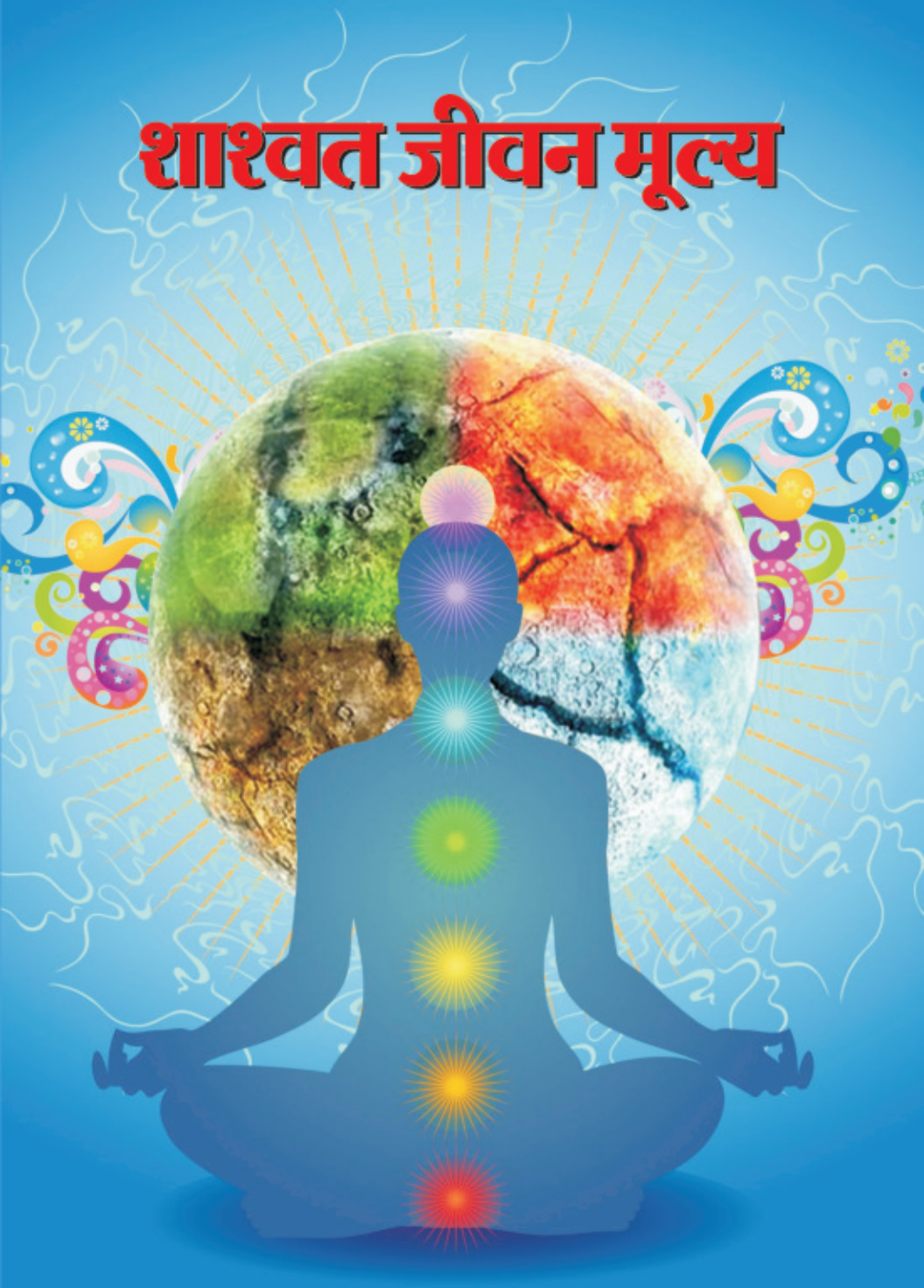

-हनुमान सिंह राठौड़

शाश्वत जीवन मूल्य

लेखक

हनुमान सिंह राठौड़

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

website: www.abrsm.in, www.abrsm.co.in

Email: abrsmdelhi@rediffmail.com, abrsmdelhi@gmail.com

शाश्वत जीवन मूल्य

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❖ चतुर्थ संस्करण : महाशिवरात्री, फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
विक्रम संवत् 2070, युगाब्द 5115

❖ सहयोग राशि : 40/-

❖ अक्षर संयोजन :
सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर

❖ मुद्रक :

❖ प्रकाशक :
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

प्रकाशकीय

भारतीय समाज सदा सर्वदा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित जीवन धारा पर चलता आया है। सम्पूर्ण संसार आज इसी बात को लेकर इसका सम्यक अभ्यास कर रहा है और समझने का प्रयास कर रहा है कि वे कौन-कौन से तत्व हैं? जो जीवन को जीने से प्रसन्न करते हैं, सन्तुष्ट करते हैं, सुखमय करते हैं, उल्लासित करते हैं। प्रेम पूर्वक, आनन्द से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं। परस्परावलंबिता के आधार पर अनुपूरक रहकर कार्य करने के लिए उत्साहित करते हैं।

भारत में जहाँ गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाओं ने अपने बौद्धिक बल पर उच्च जीवनादर्शों को सभी के समक्ष रख समाज में सर्व सम्यकता का परिचय दिया। जहाँ कुलीनता के लिए जाति की बजाय सोच (विचार) को स्थान देकर भारत की सांस्कृतिक सत्ता का प्रकटीकरण किया हो। वैसी देवभूमि, पुण्यभूमि भारत में आज दामिनी, निर्भया जैसे विभत्स दृश्य देखकर आत्मा कचोटने लगती है। व्यावसायिकता एवं खुलेपन के नाम से पाश्चात्य का कूडा, समाज में परोसने से अपने शाश्वत जीवन मूल्यों पर जबर्दस्त प्रहार हुआ है और विचारने पर मजबूर होना पड़ा है कि जो भारत, सम्पूर्ण संसार को अपने सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर 'कृणवंतो विश्वआर्यम्' का संदेश देता है वह आज किस दौर से गुजर रहा है।

इसी दृष्टि को रखकर अपने जीवन मूल्यों के स्मरण तथा कार्य व्यवहार में ये पुनः प्रकट हो, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने जन जागरण अभियान लेकर शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावकों एवं समाज के मध्य इन विषयों पर मन्थन होकर बदलाव लाने के प्रयासों की कड़ी में 'शाश्वत जीवन मूल्य' पुस्तक का निर्माण करने का संकल्प लिया है। सामाजिक विषयों के अध्येयता एवं प्रखर विचारशील श्री हनुमान सिंह राठौड़ ने इस सामग्री का पुस्तक स्वरूप में प्रकाशन करने के लिए हमें प्रदान कर सामाजिक सरोकारबद्धता का परिचय दिया है। वे सदा हमारे आग्रह पर विभिन्न विषयों पर लिखते रहे हैं। उनकी इस कृति के लिए हम सदा आभारी रहेंगे।

'शाश्वत जीवन मूल्य' पुस्तक प्रकाशन करते हुए हमें हर्ष है कि शैक्षिक महासंघ के प्रकाशन का यह 21वां पुष्प है। समाज जीवन में अत्यल्प परिवर्तन करने में यदि यह पुस्तक सहयोगी होगी तो इसकी सार्थकता सिद्ध होगी। आशा है सुधी पाठकों को पुस्तक की पाठ्य सामग्री पसन्द आयेगी।

- प्रकाशन समिति

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

भारत का विश्व गुरुत्व

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

(मनुस्मृति 2-20)

''इस देश में उत्पन्न हुए विद्वानों के सानिध्य से पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।'' यह न तो अहंकार की अभिव्यक्ति है न व्यवहार की अतिशयोक्ति। यह ऋषि परम्परा की तपःप्रसूत चरित्र-साधना की गर्वोक्ति है। यह भारत की सनातन शील-साधना की फलश्रुति है कि जिसे भी इस अनुभव को प्राप्त करना है, वह यहाँ आये और ऋषियों के चरणों में बैठकर इस वैज्ञानिक प्रक्रिया के चरणबद्ध सोपानों पर आरोहण करता हुआ उसी सत्य का साक्षात्कार करे कि सिद्धान्त यदि है तो उसका व्यवहार अवश्यम्भावी है। जो व्यवहारिक नहीं है, वह सिद्धान्त कैसे हो सकता है?

चरित्र क्या है? इसकी साधना क्यों करनी पड़ती है? इससे स्खलन की सर्वाधिक सम्भावना क्यों है? चरित्र पर आरूढ़ रहने के लिए सतत् प्रयत्न क्यों करना पड़ता है? चरित्र-पतन सुगम व स्वाभाविक प्रकृति है तो प्रकृति के विरुद्ध प्रयत्न की आवश्यकता क्या है? मन की इच्छा के अनुरूप करने की स्वतंत्रता को विधि-निषेधों, नीति-नियमों, संविधान-विधानों द्वारा नियंत्रित करने की आवश्यकता क्या है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं। दोनों धाराओं के अपने तर्क-वितर्क हैं। यह बहस चार्वाक से लेकर स्लट-वॉक तक आज तक भी चल रही है।

मनुष्य : कर्मयोनि - वैज्ञानिक पद्धति से विचार करते हुए हिन्दू दर्शन में समस्त प्राणी जगत को दो वर्गों में विभक्त किया है - भोग योनि और कर्म योनि।

पशु-पक्षी, वनस्पति, कीट-पतंग आदि भोग योनियाँ हैं। इनको पूर्व कर्मों के फल का भोग करना है, अतः ये कर्म-क्षय की योनियाँ हैं, इनमें कर्म-संचय नहीं होता क्योंकि पाप-पुण्य नहीं होता। सभी हिंसक पशु माँसाहारी हैं। ये जीव-हत्या के पाप से मुक्त हैं क्योंकि इनके लिए प्रकृति से नियत आहार माँस है। इनके पास विकल्प नहीं है।

मनुष्य कर्म योनि है। इसके पास कर्म करने का विकल्प है। जहाँ कर्म-अकर्म-विकर्म के विकल्प हों वहाँ कौनसा कर्म करना, कौनसा नहीं करना, इसके लिए संकल्प करना पड़ता है, अर्थात् जहाँ विकल्प हैं वहीं संकल्प की आवश्यकता होती है। किस विषय का चयन करना? इस प्रश्न का देश-काल-परिस्थिति के अनुसार निर्णय करने के लिए पूर्व पुरुषों ने अनुभव व समाज-स्वीकृति के आधार पर स्मृति ग्रन्थों की रचना की है, समय-समय पर संशोधन एवं नव विधान की संकल्पनाएँ दी हैं। कर्म-आचरण में विकल्प के कारण दो प्रकार